Toppersnotes
Unleash the topper in you

IB – ACIO

Intelligence Bureau

Assistant Central Intelligence Officer

Ministry of Home Affairs

भाग – 3

सामान्य अध्ययन

(भूगोल एवं राजव्यवस्था)

SIERRA INNOVATIONS

Indian Geography

भारतीय भूगोल

1	भारत की स्थिति एवं विस्तार	1
2	भारत के भौगोलिक (भौतिक) भू- भाग	6
3	भारतीय मानसून	27
4	भारत का अपवाह तन्त्र	37
5	भारत की प्राकृतिक वनस्पति (जैव संरक्षण एवं जीव मंण्डल)	46
6	भारत की मिट्टियां	61
7	भारत की जलवायु	65
8	भारत में खनिज संसाधन	82
9	भारत के प्रमुख उद्योग	89
10	भारत का परिवहन तन्त्र	91
11	भारतीय कृषि	99
12	विविध सामान्य ज्ञान विश्व एवं भारत	104

1	संविधान का परिचय– संविधान	130
2	उद्देशिका	139
3	संघ एवं राज्य	141
4	नागरिकता	144
5	मूल अधिकार	146
6	राज्य के नीति निर्देशक तत्व	157
7	मूल कर्तव्य	160
8	संविधान संशोधन	162
9	संघ (राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, संसद, समितियां)	163
10	राज्य (राज्यपाल, मुख्यमंत्री, विधान परिषद)	186
11	न्यायिक व्यवस्था (उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय)	193
12	स्थानीय सरकार (स्वशासन)	203
13	संघ एवं राज्य क्षेत्रों से सम्बन्धित प्रावधान	209
14	संघ राज्य सम्बन्ध	212
15	वित्त आयोग	216
16	व्यापार वाणिज्य समागम की स्वतन्त्रता एवं लोकसेवाएं	217
17	निर्वाचन आयोग	219
18	नियन्त्रक एवं महालेखा परीक्षक	224
19	संविधान का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य	226
20	राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग	228
21	केन्द्रीय सर्तकता एवं सूचना आयोग	229
22	लोकपाल, लोकायुक्त एवं विनियामक आयोग	230
23	भारत में विभिन्न अधिकरण	231
24	विभिन्न अधिकार एवं मुद्दे (सूचना का अधिकार, उपभोक्ता अधिकार)	232
25	लोकनीति	234
26	73 वां और 74 वां संविधान संशोधन	236
27	सांविधिक, विनियामक एवं अर्द्ध न्यायिक निकाय	245

भारतीय भूगोल
(Indian Geography)

भारत का विस्तार–

- भारत की स्थिति उत्तरी गोलार्ध एवं पूर्वी देशांतर में है ।
- भारत की आकृति चतुष्कोणीय है ।
- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4 से 37°6 उत्तरी गोलार्ध में है ।
- देशांतरीय विस्तार 68°7 से 97°25 पूर्वी देशांतर में है ।
- भारत का विश्व में क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवां एवं जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा स्थान है।

विश्व में स्थान	देश का नाम	
	क्षेत्रफल के अनुसार	जनसंख्या के अनुसार
प्रथम	रूस	चीन
द्वितीय	कनाडा	भारत
तृतीय	चीन	यू.एस.ए
चतुर्थ	यू. एस. ए.	इंडोनेशिया
पंचम	ब्राजील	ब्राजील
षष्ठ	ऑस्ट्रेलिया	पाकिस्ताान
सप्तम	भारत	नाईजीरिया
अष्टम	अर्जेनटीना	बांग्लादेश

- भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी है, जोकि विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.42% है ।
- भारत में विश्व की कुल जनसंख्या का 17.5% हिस्सा निवास करता है ।
- उत्तर से दक्षिण विस्तार 3214 किमी है और पूर्व से पश्चिम में विस्तार 2933 किमी है ।
- भारत का सबसे पूर्वी बिंदु अरुणाचल प्रदेश में वलांगु (किबिथू) है।
- सबसे पश्चिमी बिंदु गुजरात में गोरमाता सक्रिय (कच्छ जिला) में है ।
- सबसे उत्तरी बिन्दु इन्द्रा कॉल है, जो कि केन्द्र शासित प्रदेश लेह में स्थित है ।
- सबसे दक्षिणतम बिन्दु इन्दिरा पॉइंट है, इंदिरा पॉइंट को पहले पिग्मेलियन पॉइंट और पार्सन्स पॉइंट के नाम से जाना जाता था। इन्दिरा पॉइंट निकोबार द्वीप समूह में स्थित है। इसकी भूमध्य रेखा से दूरी 876 किमी है ।
- प्रायद्वीपीय भारत का सबसे दक्षिणी भाग तमिलनाडु में केप कोमोरिन (कन्याकुमारी) में स्थित है।
- भारत की स्थल सीमा की लम्बाई 15200 किमी है
- तटीय भाग की लम्बाई है 7516 किमी (द्वीप समूह मिलाकर)। केवल भारतीय प्रायद्वीप की तटीय सीमा 6100 किमी है ।
- भारतीय मानक समय रेखा 82°30 पूर्वी देशांतर पर है। मानक समय रेखा 5 राज्यों से होकर गुजरती है ।
  - उत्तर प्रदेश (मिर्जापुर)
  - छत्तीसगढ
  - मध्य प्रदेश
  - आंध्र प्रदेश
  - ओडिशा
- भारतीय मानक समय और ग्रीनविच समय के बीच अंतर 5.30 घण्टे का है । भारतीय समय ग्रीनविच समय से आगे चलता है ।
- सर्वाधिक राज्यों की सीमा को छूने वाला भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश है। उत्तर प्रदेश कुल 9 राज्यों से सीमा बनाता है ।
  - उत्तराखण्ड
  - हरियाणा
  - दिल्ली
  - हिमाचल प्रदेश
  - राजस्थान
  - मध्य प्रदेश
  - छत्तीसगढ
  - झारखण्ड
  - बिहार
- भारत के कुल 9 राज्य एवं – केन्द्र शासित प्रदेश समुद्री तट से लगे हुए हैं।
  - गुजरात
  - महाराष्ट्र
  - गोवा
  - कर्नाट
  - केरल
  - तमिलनाडु
  - आरूणाचल प्रदेश
  - उडीसा
  - पश्चिम बंगाल
- केन्द्र शामित प्रदेश
  - लक्षद्वीप
  - आण्डमान निकोबार
  - दमन और दीव
  - पुदुच्चेरी (पांडिचेरी)
- हिमालय को छूने वाले 11 राज्य व 2 केन्द्र शासित प्रदेश हैं।

राज्य

- हिमाचल प्रदेश
- उत्तराखण्ड
- सिक्किम
- अरुणाचल प्रदेश
- नागालैंड
- मणिपुर
- मिजोरम
- त्रिपुरा
- मेघालय
- असम
- पश्चिम बंगाल

केंद्र शासित प्रदेश

- जम्मू कश्मीर
- लेह

भारत के 8 राज्यों से होकर कर्क रेखा गुजरती है।

- गुजरात
- राजस्थान
- मध्य प्रदेश
- छत्तीसगढ
- झारखण्ड
- पश्चिम बंगाल
- त्रिपुरा
- मिजोरम

- भारत का सर्वाधिक नगरीकृत राज्य गोवा है ।
- भारत का सबसे कम नगरीकृत राज्य हिमाचल प्रदेश है ।
- भारत का मध्य प्रदेश सबसे अधिक वन वाला राज्य है ।
- भारत का हरियाणा सबसे कम वन वाला राज्य है ।
- भारत का मौसिनराम (मेघालय) में सबसे अधिक वर्षा होती है ।
- भारत के केन्द्र शासित प्रदेश लेह में सबसे कम वर्षा होती है ।
- अरावली पर्वत सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखला है ।
- हिमालय पर्वत सबसे नवीन पर्वत श्रृंखला है ।

भारत की अंतरराष्ट्रीय सीमाएं एवं पडोसी देश

- भारत की कुल 15200 किमी सीमा रेखा 92 जिलों और 17 राज्यों से होकर गुजरती है ।
- भारत की तटीय सीमा 7516 किमी है जोकि 9 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को स्पर्श करती है। केवल प्रायद्वीप भारत की तटीय सीमा रेखा 6100 किमी है ।
- भारत के मात्र 5 राज्य ऐसे है जो किसी भी अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा और तट रेखा को स्पर्श नहीं करते है –
  - हरियाणा
  - मध्य प्रदेश
  - झारखण्ड
  - छत्तीसगढ
  - तेलंगाना

- भारतीय राज्यों में गुजरात की तट रेखा सर्वाधिक लंबी है। इसके बाद आंध्र प्रदेश की तट रेखा है ।
- त्रिपुरा तीन तरफ से बांग्लादेश से घिरा राज्य है ।
- भारत के 7 पडोसी देश भारत की थल सीमा को स्पर्श करते है –
  - पाकिस्तान – 3323 किमी
  - चीन – 3488 किमी
  - नेपाल – 1751 किमी
  - बांग्लादेश – 4096.7 किमी
  - भूटान – 699 किमी
  - म्यांमार – 1643 किमी
  - अफगानिस्तान – 106 किमी

- भारत की सबसे लंबी अंतर्राष्ट्रीय सीमा बांग्लादेश के साथ लगती है ।
- भारत सबसे छोटी अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा अफगानिस्तान के साथ साझा करता है जोकि केवल 80 किमी है ।
- भारत के 2 पडोसी देश जो भारत की तटीय सीमा के साथ जुडे हुए है।
  1. श्रीलंका
  2. मालद्वीप
- ऐसे देश जो थल एवं जल दोनों सीमा बनाते है।
  - पाकिस्तान
  - बांग्लादेश
  - म्यांमार
- पाकिस्तान के साथ भारत के 3 राज्य एवं 2 केन्द्र शासित प्रदेश सीमा साझा करते है –

राज्य

1. पंजाब
2. राजस्थान
3. गुजरात

केन्द्र शासित प्रदेश

1. जम्मू कश्मीर
2. लेह

- चीन के साथ भारत के 4 राज्य एवं 2 केन्द्र शासित प्रदेश सीमा साझा करते हैं –

राज्य

1. हिमाचल प्रदेश
2. उत्तराखण्ड
3. सिक्किम
4. अरुणाचल प्रदेश

केन्द्र शासित प्रदेश

1. जम्मू कश्मीर
2. लेह

- नेपाल के साथ भारत के 5 राज्य सीमा साझा करते हैं –
  1. उत्तराखण्ड
  2. उत्तर प्रदेश
  3. बिहार
  4. सिक्किम
  5. पश्चिम बंगाल

- भूटान के साथ भारत के 4 राज्य सीमा साझा करते हैं
  1. पश्चिम बंगाल
  2. सिक्किम
  3. अरुणाचल प्रदेश
  4. असम

- म्यांमार के साथ भारत के 4 राज्य सीमा साझा करते हैं –
  1. अरुणाचल प्रदेश
  2. नागालैण्ड
  3. मणिपुर
  4. मिजोरम

अफगानिस्तान के साथ भारत का एक केन्द्र शासित प्रदेश सीमा बनाता है – (केवल 80 किमी POK)

- लद्दाख

- पाक जलडमरूमध्य और मन्नार की खाडी श्रीलंका को भारत से अलग करती है। पाक जलडमरूमध्य को पाक जल संधि के नाम से भी जाना जाता है।
- मेकमोहन रेखा भारत और चीन के बीच में स्थित है । यह रेखा 1914 में शिमला समझौते में निर्धारित की गयी थी ।
- 1886 में सर डूरण्ड द्वारा भारत और अफगानिस्तान के बीच में डूरण्ड रेखा स्थापित की गई थी। परन्तु यह रेखा अब अफगानिस्तान एवं पाकिस्तान के मध्य है ।
- भारत और पाकिस्तान के बीच रेडक्लिफ रेखा है। रेडक्लिफ रेखा का निर्धारण 15 अगस्त, 1947 को सर सिरिल रैडक्लिफ की अध्यक्षता में सीमा आयोग द्वारा किया गया था ।

सीमावर्ती सागर :–

- सीमावर्ती सागर क्षेत्र आधार रेखा से 12**nm** तक स्थित है ।
- क्षेत्र में भारत का एकाधिकार है ।

➢ भारत का अक्षांशीय तथा देशान्तरीय विस्तार लगभग 30° है परन्तु भारत में उत्तर से दक्षिण तक की दूरी, पूर्व से पश्चिम की दूरी से अधिक है क्योंकि ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर बढने पर देशान्तर के बीच दूरी कम होती जाती है । परन्तु अक्षांशों के बीच दूरी समान रहती है ।

Impact of Latitude:-

➢ भारत का अक्षांशीय विस्तार 30° होने के कारण भारत में जलवायु, मृदा तथा वनस्पति से संबंधित विविधता पाई जाती है ।

➢ कर्क रेखा भारत को दो प्रमुख भागों में बाँटती है– भारत का दक्षिणी भाग ऊष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में तथा उत्तरी भाग शीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में स्थित है ।

➢ फिर भी भारत में ऊष्ण कटिबन्धीय मानसून जलवायु पाई जाती है क्योंकि उत्तर में स्थित हिमालय पर्वत साइबेरिया से आने वाली ठण्डी पवनों को रोकता है ।

➢ कर्क रेखा भारत के निम्नलिखित राज्यों से गुजरती है ।

- **Gujarat**
- **Rajasthan**
- **Madhya Pradesh**
- **Chhattisgarh**
- **Jharkhand**
- **West Bengal**
- **Tripura**
- **Mizoram**

Impact of Longitudinal Extension:-

➢ भारत का देशान्तरीय विस्तार 30° होने के कारण भारत के सबसे पूर्वी तथा पश्चिमतम भाग के बीच 2 घंटे का अन्तर पाया जाता है ।

➢ 82½°**E** देशान्तर को भारत की स्थानीय समय गणना के लिए एक मानक देशान्तर के रूप में चुना गया है ।

➢ भारत का समय **GMT** से 5½ घंटे आगे है ।

- 82½°E निम्नलिखित राज्यों से गुजरती है:-
- **Uttar Pradesh**
- **Madhya Pradesh**
- **Chhattisgarh**
- **Odisha**
- **Andhra Pradesh**

- भारत–पाकिस्तान सीमा रेखा = रेडक्लिफ रेखा
- भारत–चीन सीमा रेखा = मैकमोहन
- भारत–अफगानिस्तान सीमा रेखा = डूरन्ड रेखा

भारतीय उपमहाद्वीप **(Indian Subcontinent):-**

- उपमहाद्वीपीय उस भाग को कहा जाता है जो महाद्वीप में अपनी एक पृथक पहचान रखता हो ।
- भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरण की दृष्टि से भारत एशिया के अन्य देशों से पृथक पहचान रखता है ।
- भारत के उत्तरी भाग में पर्वत स्थित है जैसे – हिन्दुकुश, सुलेमान, हिमालय, पूर्वांचल तथा पूर्व में अराकनयोगा जो भारत को एशिया के मुख्य भूभाग से पृथक करते हैं ।
- भारत के दक्षिणी भाग में महासागरीय क्षेत्र स्थित है जो भारत तथा पडौसी देशों को पृथक पहचान दिलाता है ।
- भारतीय उपमहाद्वीप में निम्नलिखित देश सम्मिलित है:-

  - **INDIA**
  - **Pakistan**
  - **Afghanistan**
  - **Nepal**
  - **Bhutan**
  - **Bangladesh**
  - **Shri Lanka**
  - **Maldives**

भारत का प्रादेशिक जल सीमा, संलग्न क्षेत्रमण्डल तथा अनन्य आर्थिक क्षेत्र :→

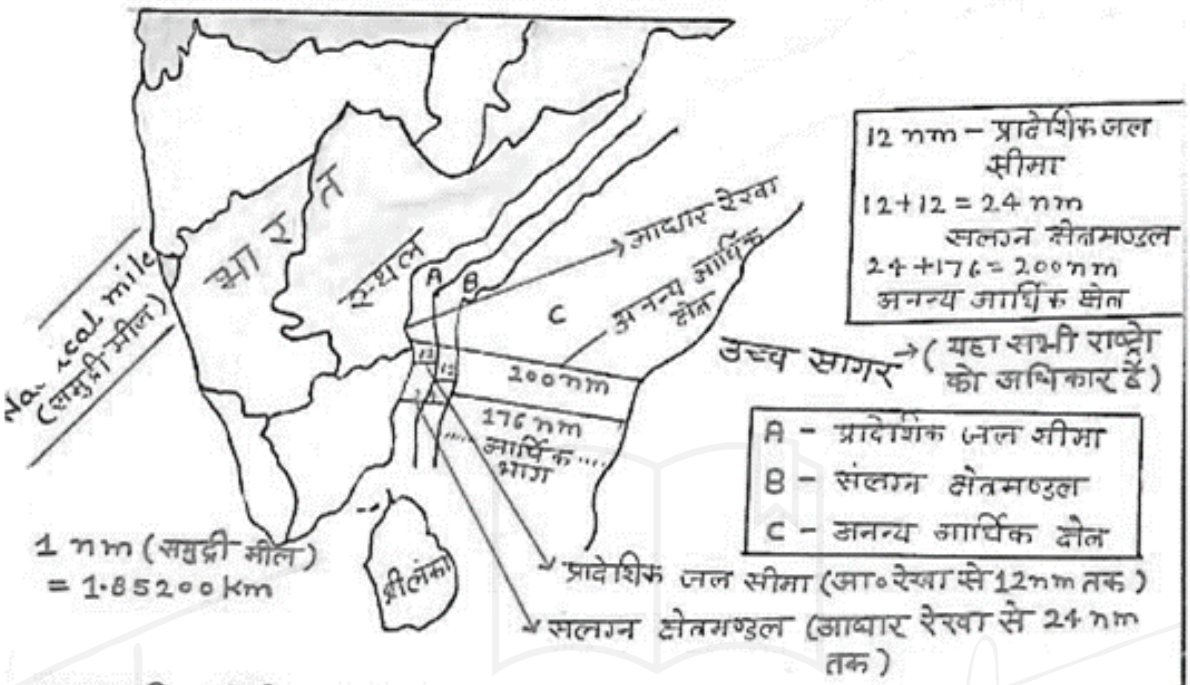

भारत की प्रादेशिक जल सीमा या समुद्री सीमा → भारतीय 'प्रादेशिक जल सीमा' तट रेखा से 12 nm की दूरी तक है।
(Maritime Belt) (Territorial sea)

इस क्षेत्र के उपयोग का भारत को पूर्णतः अधिकार है।

अविच्छिन्न मंडल या संलग्न क्षेत्र → इसकी दूरी आधार रेखा से 24 nm तक है। इस क्षेत्र में भारत को राजकोषीय अधिकार, सीमा शुल्क से सम्बन्धित प्रदूषण नियंत्रण से सम्बन्धित अधिकार है।
(Contiguous Zone)

अनन्य आर्थिक क्षेत्र – अनन्य आर्थिक क्षेत्र आधार रेखा से 200 nm तक है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत भारत को खनिज संपदा, सागरीय जल शक्ति, सागरीय जीवों आदि के सर्वेक्षण, विदोहन, संरक्षण एवं वैज्ञानिक अनुसंधान व नये द्वीपों के निर्माण का अधिकार प्राप्त है। भारत का अनन्य आर्थिक क्षेत्र 2.02 मिलियन वर्ग कि मी क्षेत्र में फैला है।
(Exclusive Economic Zone)

उच्च सागर → अनन्य आर्थिक क्षेत्र के बाद उच्च सागर का विस्तार है जहाँ सभी राष्ट्रों को समान अधिकार है।

भारत का देशान्तरीय विस्तार अधिक है। 82°30' पूर्वी देशान्तर रेखा को देश का मानक याम्योत्तर माना गया है यह इलाहाबाद के नैनी से होकर गुजरती है। भारतीय मानक समय (I.S.T) ग्रीनविच मीन टाइम (G.M.T) से 5:30 घण्टे आगे है।

भारत के भौगोलिक भू–भाग
(Physiography Devision of India)

भारत के भौगोलिक भू–भागः–

1. **Himalayan Mountain Region**
2. **Northern Plain Region**
3. **Peninsula Plateau Region**
4. **Coastal Plain Region**
5. **Island Groups Region**

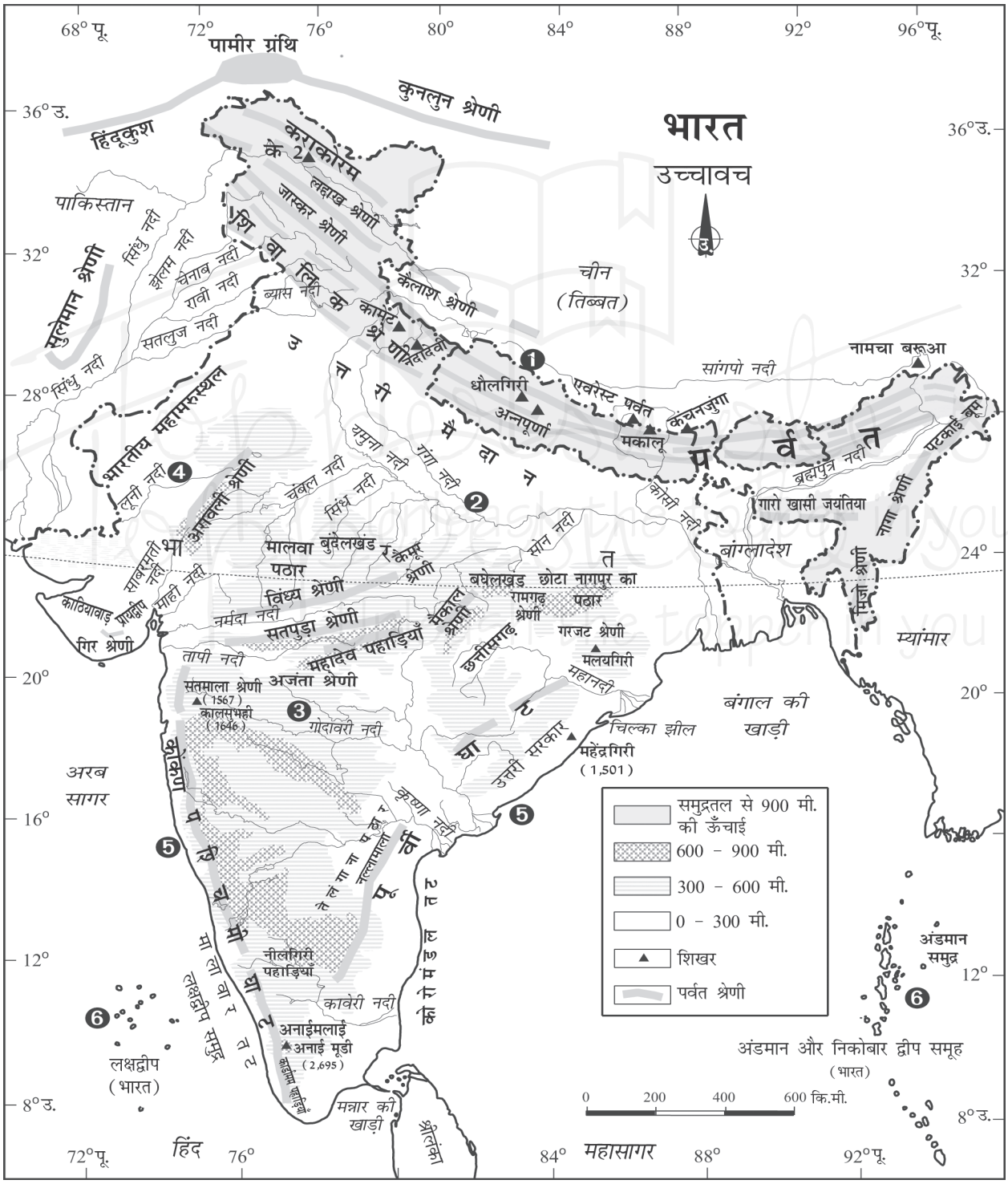

1. हिमालय पर्वतीय प्रदेश:-

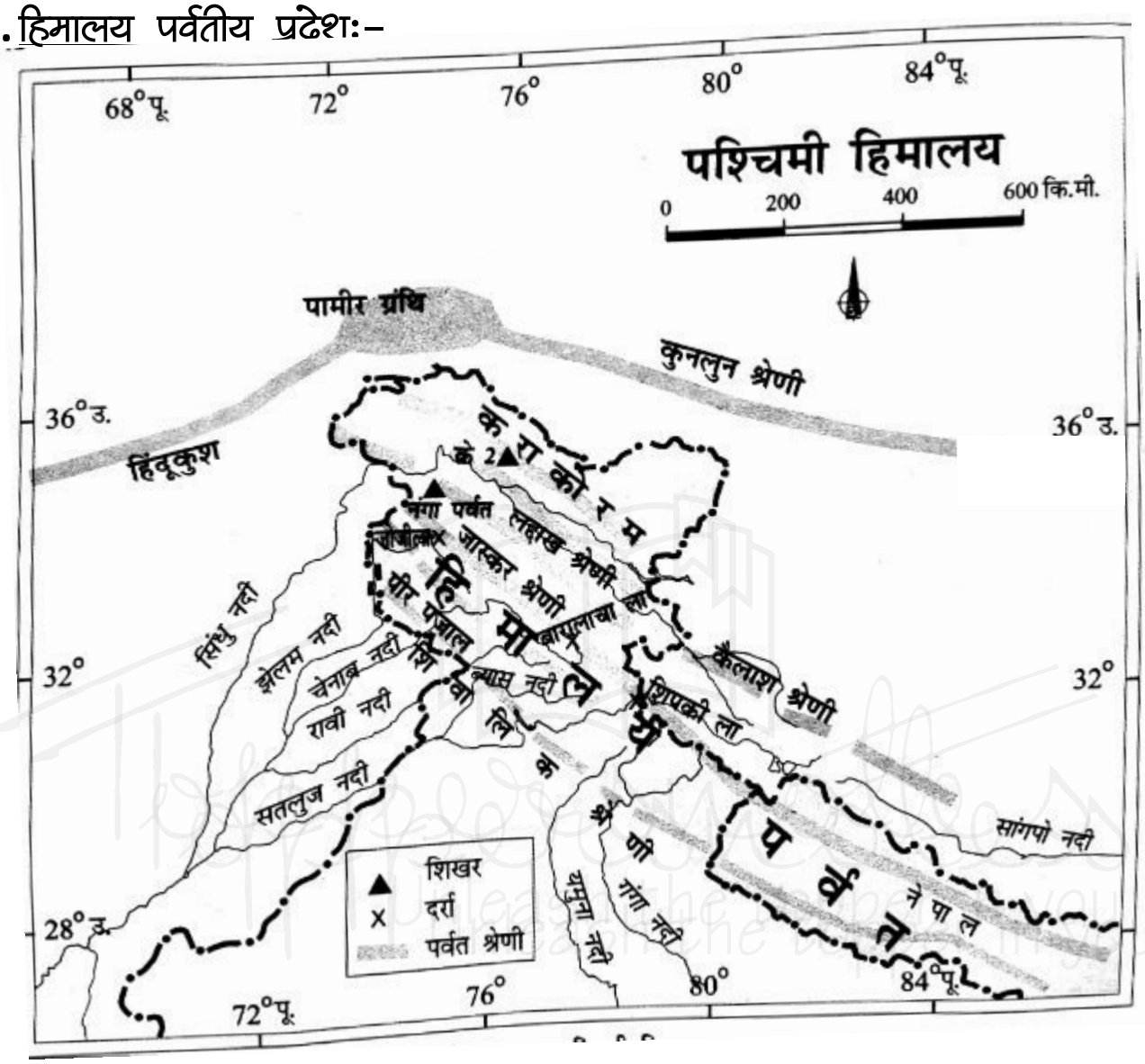

- भारत के उत्तरी सीमा पर स्थित पर्वत तंत्र हिमालय पर्वतीय प्रदेश का निर्माण करता है ।
- इस पर्वत तंत्र का निर्माण नवीन वलित पर्वतों से हुआ है ।
- ये वलित पर्वत 'यूरेशियन प्लेट' तथा 'भारतीय प्लेट' के अभिसरण से निर्मित हुए है ।
- क्योंकि इस पर्वत तंत्र का निर्माण टरशरी काल में हुआ है, इसलिए इसे 'टर्शियरी पर्वत तंत्र' भी कहा जाता है । **Tertiary Period** (टर्शियरी काल) = (70 मिलियन वर्ष–11 मिलियन वर्ष पूर्वतक)
- यह पर्वत तंत्र विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत तंत्र है, इसलिए इस तंत्र में बहुत से अल्पाइन हिमनद भी पाये जाते है ।
- भारत की सबसे प्रमुख नदियों का उदगम इसी पर्वत पर स्थित हिमनदों से होता है ।
- इस पर्वतीय प्रदेश को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:-

A. Trans Himalaya:-

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का सबसे उत्तरी भाग ट्रांस हिमालय कहलाता है ।

- यह मुख्य रूप से 'जम्मू-कश्मीर' व 'तिब्बत' में स्थित है ।
- मुख्य हिमालय के वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहाँ शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ पाई जाती है:-

(a) काराकोरम श्रेणी:-

- ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी।

- ट्रांस हिमालय की सबसे लम्बी व ऊँची श्रेणी है ।
- 'माउण्ट गोडविन ऑस्टिन' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है, जो कि भारत की सबसे ऊँची तथा विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है । (8611 किमी.)
- यह श्रेणी अपने अल्पाइन हिमनदों के लिए विख्यात है:-
  1. बतुरा
  2. हिस्पार
  3. बियाको
  4. बालतोरो
  5. सियाचिन

- सियाचिन हिमनद' नुबरा घाटी में स्थित है तथा इस हिमनद के पिघलने से नुबरा नदी का उदगम होता है, जो कि सिन्धु की सहायक नदी है ।

(b) लद्दाख श्रेणी:-

- काराकोरम श्रेणी के दक्षिण में स्थित।
- तिब्बत में इस श्रेणी का विस्तार 'कैलाश पर्वत' के नाम से जाना जाता है ।
- तिब्बत में इस श्रेणी के दक्षिण में 'मानसरोवर झील' स्थित है ।
- 'रकापोशी चोटी' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है

(c) जास्कर श्रेणी:-

- ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी ।
- जास्कर तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य सिन्धु घाटी स्थित है ।

Note:- लद्दाख पठार:-

- काराकोरम श्रेणी तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य स्थित अन्तः पर्वतीय पठार ।
- इस पठार की ऊँचाई लगभग 4800 मीटर है, तथा यह भारत का सबसे ऊँचा पठार है ।
- वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण इस पठार पर शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है, इसलिए यह एक 'ठण्डे मरूस्थल' का उदाहरण है ।
- इस पठार पर बहुत सी खारे पानी की झील पाई जाती है ।

B. Main Himalaya:-

- यह पर्वतीय प्रदेश का दूसरा प्रमुख भाग है ।
- यह भाग सिन्धु नदी घाटी से ब्रह्मपुत्र नदी घाटी तक स्थित है ।
- इस भाग के दोनों ओर अक्षसंधीय मोड **(Systaxial Bend)** पाया जाता है ।
- इस भाग भाग की चौडाई पश्चिमी भाग में अधिक तथा पूर्वी भाग में कम है ।
- यह लगभग 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख श्रेणियाँ है:-
  - **(i).** वृहत हिमालय **(Great Himalaya)**
  - **(ii).** मध्य हिमालय **(Middle Himalaya)**
  - **(iii).** शिवालिक **(Shivalik)**

(a). वृहत हिमालय (Great Himalaya):-

- यह श्रेणी नंगा पर्वत से नामचा बरवा के बीच स्थित है ।
- यह 2400 किमी. की दूरी से विस्तृत है तथा इसकी औसत चौडाई 25 किमी. एंव औसत ऊँचाई 6100 मी. है ।
- ऊँचाई अधिक होने के कारण यह पर्वत वर्ष भर बर्फ से ढका रहता है अतः इसे हिमाद्री भी कहा जाता है ।
- यह विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रेणी है ।
- इस श्रेणी में विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट (8848 मी.) स्थित है ।
- माउण्ट एवरेस्ट नेपाल-चीन सीमा पर स्थित है ।
- इसे नेपाल में सागरमाथा कहते है । (माउण्ट एवरेस्ट को)
- इस पर्वत पर बहुत से प्रमुख हिमनद स्थित है । **e.g.-** गंगोत्री, यमुनोत्री, सतोपंथ, पिंडारी, मिलान **etc.**
- इस श्रेणी में बहुत से दर्रे है जिन्हें स्थानीय भाषा में 'ला' कहा जाता है ।
- वृहत हिमालय के प्रमुख दर्रे:-

➢ **Burzila**	➢ **Niti**
➢ **Zajila**	➢ **Lipu Lekh**
➢ **Baralachha**	➢ **Nathula**
➢ **Shipkila**	➢ **Jaleepla**
➢ **Mana**	➢ **Bomdil**

(i). बुर्जिला दर्रा:-

- यह श्रीनगर को **POK** से जोडता है ।
- इस दर्रे के माध्यम से घुसपैठ गतिविधियाँ होती है

(ii). जोजिला दर्रा:–

- यह दर्रा श्रीनगर को लेह से जोडता है ।
- इस दर्रे से **NH-1D** गुजरता है ।

(iii). बारालच्छा दर्रा:– यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को लेह से जोडता है ।

(iv). शिपकिला दर्रा:–

- यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को तिब्बत से जोडता है ।
- इस दर्रे का निर्माण सतलज नदी द्वारा किया गया है ।
- इसी दर्रे के माध्यम से सतलज नदी भारत में प्रवेश करती है ।
- इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है ।

(v). माना:– यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है

(vi). नीति:– यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है

(vii). लिपुलेख दर्रा:–

- यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।
- इस दर्रे के माध्यम से कैलाश मानसरोवर की यात्रा की जाती है । अतः इसे 'मानसरोवर का द्वार' भी कहा जाता है ।
- इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है ।

(viii). नाथूला दर्रा:–

- यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोडता है ।
- इस दर्रे से प्राचीन रेशम मार्ग गुजरता था।
- इस दर्रे का उपयोग चीन के साथ व्यापार एवं कैलाश मानसरोवर की यात्रा के लिए किया जाता है
- मानसरोवर की यात्रा इस दर्रे के माध्यम से अधिक सुगम होती है ।

(ix). जलीपला दर्रा:– यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोडता है ।

(x). बोमडिला दर्रा:– यह दर्रा अरूणाचल प्रदेश को तिब्बत से जोडता है ।

(b). मध्य हिमालय (Middle Himalaya):-

- इसे हिमाचल हिमालय या लघु हिमालय भी कहते हैं ।
- यह श्रेणी 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इसकी औसत चौडाई 50 किमी. है ।
- इस श्रेणी की ऊँचाई लगभग 3700–4500 मी. के बीच पाई जाती है ।
- इस श्रेणी के विभिन्न स्थानीय नाम हैं:–
  - **J & K – Pir Panjal**
  - **Himachal Pradesh – Dhauladhar**
  - **Uttarakhand - Mussoorie/Nag Tibba**
  - **Nepal – Mahabharat**
  - **Sikkim – Dokya**
  - **Bhutan – Black Mountain**

- मध्य हिमालय तथा वृहत हिमालय के बीच बहुत सी घाटियाँ स्थित हैं:–
  - कश्मीर घाटी = वृहत हिमालय – पीर पंजाल
  - कुल्लू घाटी = वृहत हिमालय – धौलाधर
  - कांगडा घाटी **(HP)** = वृहत हिमालय – मसूरी
  - काठमांडू घाटी = वृहत हिमालय – महाभारत

- इस श्रेणी पर ग्रीष्म ऋतु में शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान पाए जाते हैं । जिन्हें जम्मू कश्मीर मे 'मर्ग' तथा उत्तराखण्ड मे 'बुग्याल, पयाला' कहा जाता है ।
- शीत ऋतु के दौरान यह श्रेणी बर्फ से ढक जाती है
- इस श्रेणी पर स्थित घास के मैदानों का उपयोग स्थानीय समुदाय अपने पशुओं को चराने के लिए करते हैं ।
- इस श्रेणी क्षेत्र में बहुत से पर्यटन स्थल पाए जाते हैं । **e.g.** कुल्लू, मनाली, नैनीताल, मसूरी **etc.**

- इस श्रेणी में कुछ प्रमुख दर्रे पाए जाते हैं :–
  1. पीरपंजाल दर्रा:–यह दर्रा श्रीनगर को **POK** से जोडता है ।
  2. बनिहाल दर्रा:– श्रीनगर को जम्मू से जोडता है, **NH-1A** इस दर्रे से गुजरता है । इस दर्रे में जवाहर सुरंग स्थित है ।

ऋतु प्रवास (Transhumance):-

- ऋतुओं में होने वाले परिवर्तन के साथ जब स्थानीय समुदाय अपने पशुओं के साथ चारे तथा जल की तलाश/खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पलायन करते हैं ।, उसे ऋतु प्रवास कहा जाता है ।
- जम्मू-कश्मीर में गुर्जर तथा बकरवाल समुदाय ऋतु प्रवास करते हैं ।
- ग्रीष्म ऋतु के दौरान ये पर्वतों की ओर तथा शीत ऋतु में घाटी क्षेत्र की ओर पलायन करते हैं ।

करेवा (Karewa):-

- पीरपंजाल श्रेणी के निर्माण के कारण कश्मीर घाटी क्षेत्र में अस्थायी झीलों का निर्माण हुआ जो नदियों द्वारा लाए गए अवसादों से भर गई तथा इन्हीं अवसादों को करेवा कहते हैं ।
- करेवा कश्मीर घाटी क्षेत्र में पाए जाने वाले उपजाऊ हिमनद, नदी एवं झील के अवसाद **(Glacial, Riverine & Lacustrine)** हैं । इस अवसादों का उपयोग केसर व चावल की खेती के लिए किया जाता है ।

(C) शिवालिक (Shivalik):-

- शिवालिक श्रेणी की ऊँचाई 500–1500 मी. के बीच पाई जाती है ।
- इसकी चौडाई 10–50 किमी. है ।
- शिवालिक को विभिन्न स्थानीय नामों से जाना जाता है:–

➢ **J & K – Jammu Hills**

➢ **Uttarakhand – Dudwa/Dhang**
(दूदवा/धांग)

➢ **Nepal – Churiaghat**
(चूडियाघाट)

➢ **A.P. – Dafla**
(दाफला)

➢ **Miri**
(मिरी)

➢ **Abhor**
(अबोर)

➢ **Mishmi**
(मिस्मी)

- शिवालिक श्रेणी के निर्माण के दौरान मध्य हिमालय तथा शिवालिक श्रेणी के बीच अस्थाई झीलों का निर्माण हुआ था।
- यह झीलें कालान्तर में अवसादों से भर गईं जिससे समतल घाटियों का निर्माण हुआ।
- इन घाटियों को पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में **'दून'** तथा पूर्वी हिमालय क्षेत्र में **'द्वार'** कहते हैं ।
e.g.- देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून, हरिद्वार, निहांगद्वार **etc.**
- इन घाटियों का उपयोग चावल की खेती के लिए किया जाता है ।

चोस (Chos):-

- हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब में स्थित शिवालिक श्रेणी क्षेत्र में मानसून के दौरान अस्थायी धाराओं का निर्माण होता है, जिन्हें स्थानीय भाषा में चोस कहते है ।
- यह धाराएँ शिवालिक को विभिन्न भागों में विभाजित कर देती है ।

C. पूर्वांचल (Purvanchal):-

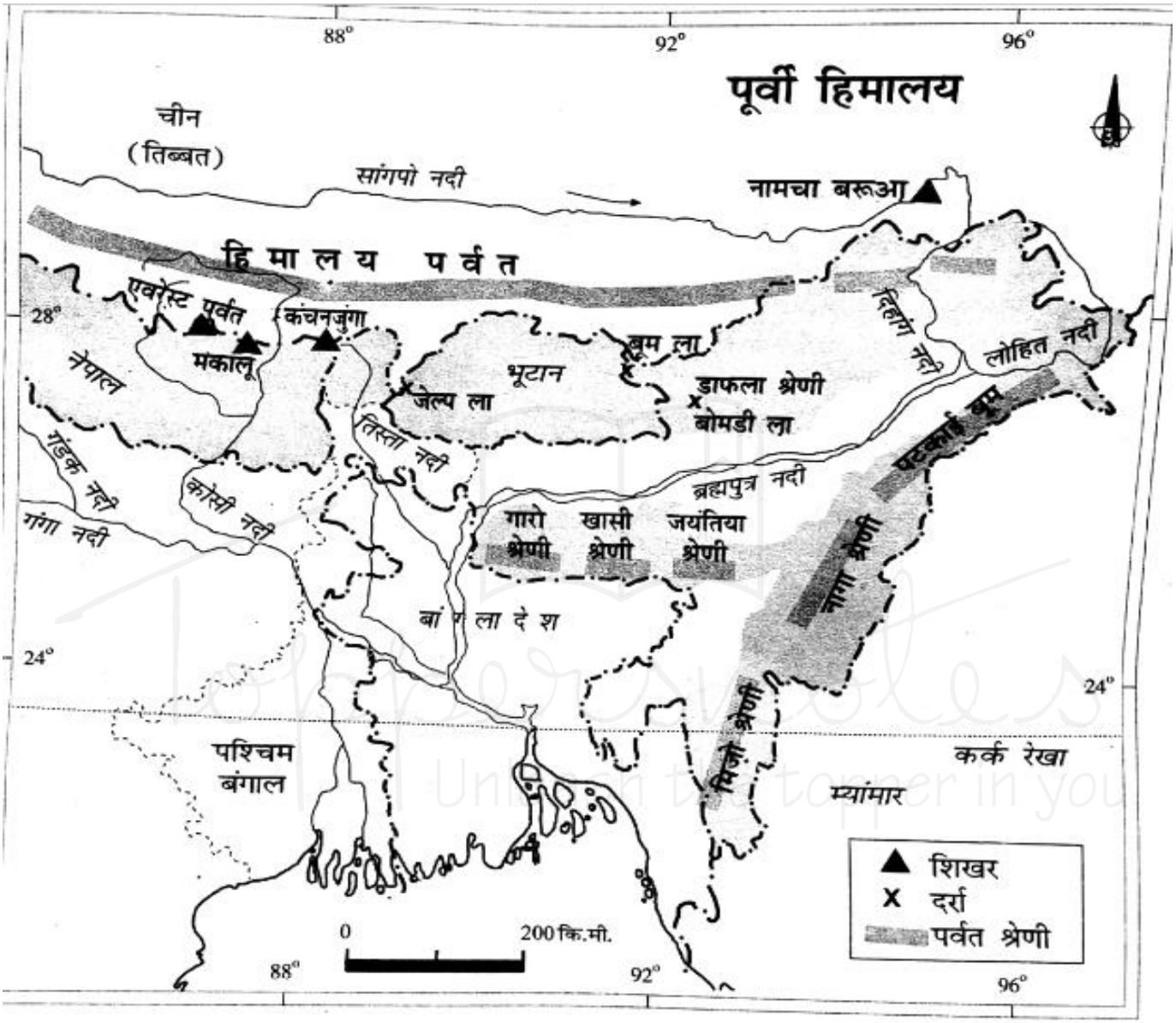

- उत्तर-पूर्वी राज्यों में उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तृत पहाडियों को पूर्वांचल कहते है ।
- पूर्वांचल का निर्माण इण्डो-ऑस्ट्रेलियन तथा बर्मा प्लेट के अभिसरण से हुआ है ।
- यह बालू पत्थर से निर्मित पहाडियाँ है ।
- दक्षिण-पश्चिम मानसून पवनों द्वारा यहाँ भारी वर्षा प्राप्त होती है अतः यहाँ बहुत अधिक जैव-विविधता पाई जाती है ।
- यह विश्व के 36 **Hotspots** में सम्मिलित है ।
- नागा पहाडियों की सबसे ऊँची चोटी सरामती है ।
- मिजो पहाडियों को लुशाई पहाडियाँ भी कहते है ।
- मिजो पहाडियों की सबसे ऊँची चोटी ब्लू माउण्टेन है ।
- बराइल श्रेणी नागा पहाडियों एवं मणिपुर पहाडियों को अलग करती है ।

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का प्रादेशिक विभाजनः–

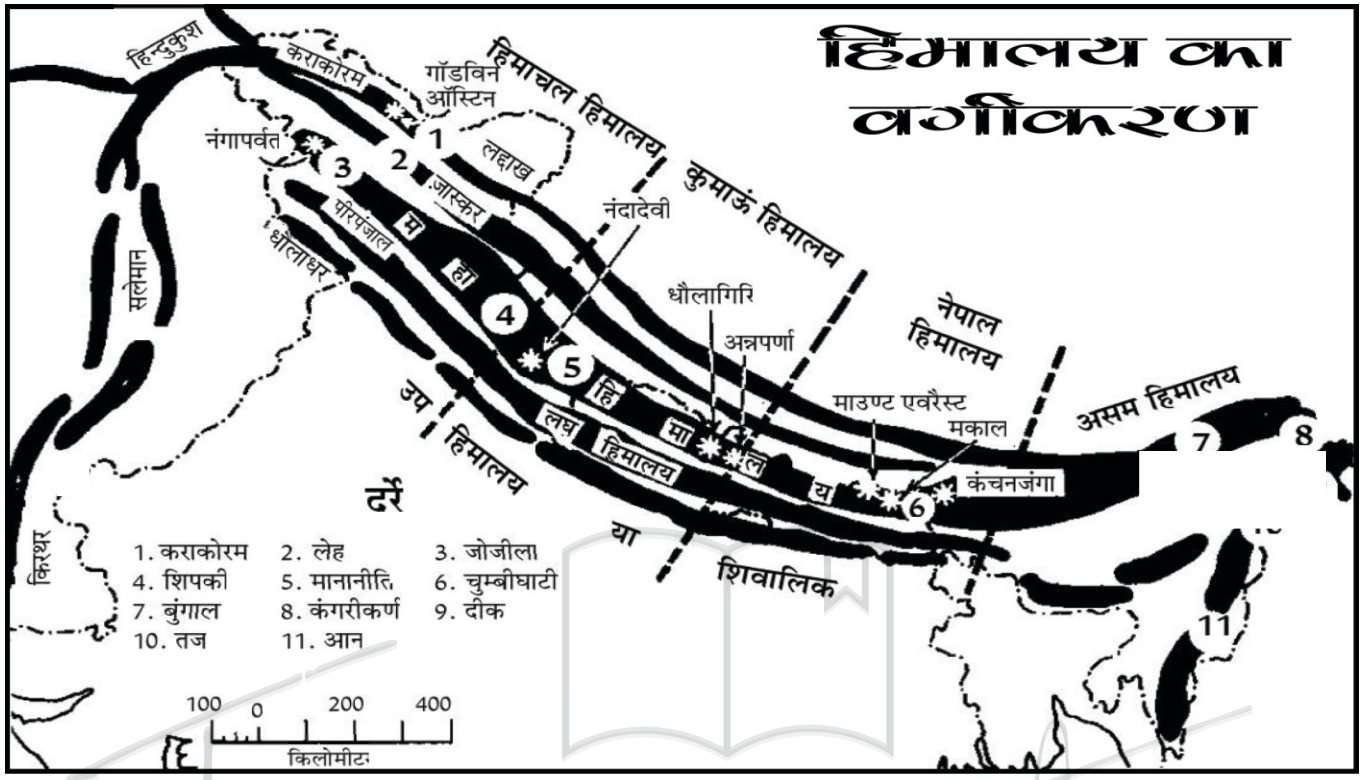

(a).कश्मीर/पंजाब/fgekpy हिमालय (Kashmir/Punjab Himalaya):-

- ि मालय का यह भाग सिंधु तथा सतलज नदी के
- यह लगभग 560 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस भाग में जास्कर, पीरपंजाल श्रेणी एवं जम्मू पहाडियाँ स्थित है ।
- इस भाग में हिमालय की चौडाई सर्वाधिक पाई जाती है । जो लगभग 250–400 किमी. के बीच पाई जाती है ।
- यहाँ हिमालय की ऊँचाई क्रमिक रूप से बढने लगती है ।

(b). कुमायूँ हिमालय (Kumao Himalaya):-

- हिमालय का यह भाग सतलज से काली नदी के बीच स्थित है ।
- यह 320 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- यह भाग मुख्य रूप से उत्तराखण्ड में स्थित है ।
- यहाँ कुछ प्रमुख चोटियाँ स्थित है । **e.g.-** नंदा देवी, केदारनाथ, बद्रीनाथ, कामेट, त्रिशुल ।

(c). नेपाल हिमालय (Nepal Himalaya):-

- यह भाग काली तथा तिस्ता नदी के बीच स्थित है।
- इस भाग में हिमालय की ऊँचाई सर्वाधिक पाई जाती है।
- यहाँ कई प्रमुख ऊँची चोटियाँ पाई जाती है।**e.g.-** माउण्ट एवरेस्ट, कंचनजंगा (8598 मी.)
- यहाँ हिमालय की चौडाई अत्यधिक कम हो जाती है।

(d). असम हिमालय (Assam Himalaya):-

- यह भाग तिस्ता से दिहांग नदी के बीच स्थित है।
- यह 720 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
- यहाँ हिमालय की चौडाई सबसे कम हो जाती है जो लगभग 150 किमी. हो जाती है।
- इस भाग में हिमालय की ऊँचाई क्रमिक रूप से कम होने लगती है।

हिमालय का महत्वः–

1. हिमालय पर्वत भारत को प्राकृतिक सीमा प्रदान करता है जिसके कारण भारत को एक उपमहाद्वीप की संज्ञा प्राप्त होती है ।
2. भारत की जलवायु पर भी हिमालय पर्वत का प्रभाव रहता है । हिमालय पर्वत साइबेरिया से आने वाली ठण्डी पवनों को रोकता है । यह मानसून पवनों को भारत में वर्षा करने के लिए बाध्य करते है
3. हिमालय पर्वतीय क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की वनस्पति पाई जाती है । यहाँ बहुत अधिक जैव विविधता पाई जाती है ।
4. यहाँ बहुत से हिमनद स्थित है जिनसे भारत की प्रमुख नदियों का उदगम होता है ।
5. हिमालय का धार्मिक महत्व भी है । हिमालय पर्वतीय क्षेत्र में बहुत से तीर्थस्थल स्थित है ।
6. पर्यटन की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ बहुत से पर्वतीय स्थल **(Hill Station)** स्थित है ।

- करेवा
- चोस
- सियाचिन हिमनद
- नुवा घाटी
- उत्तरी पर्वतीय प्रदेश
- ट्रांस हिमालय

2. उत्तरी मैदानी प्रदेशः–

- इस मैदानी प्रदेश का निर्माण नदियों द्वारा जमा किए गए अवसादों से होता है ।
- यह विश्व के सबसे विस्तृत जलोढ मैदान है ।
- यह भारत का नवीनतम प्रदेश है ।
- इस अत्यधिक उपजाऊ मैदान का उपयोग कृषि के लिए किया जाता है तथा यहाँ सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व पाया जाता है ।

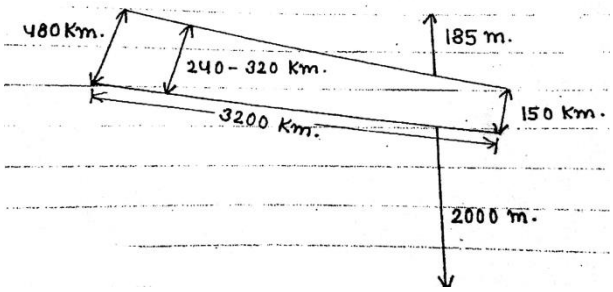

- यह प्रदेश 7 लाख वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है ।
- इस मैदानी प्रदेश की चौडाई लगभग 240–320 किमी. पाई जाती है ।
- इन मैदानों में जलोढ अवसादों का जमाव 2000 मी. की गहराई तक पाया जाता है ।
- यह समतल मैदान है जिनका ढाल मन्द है ।

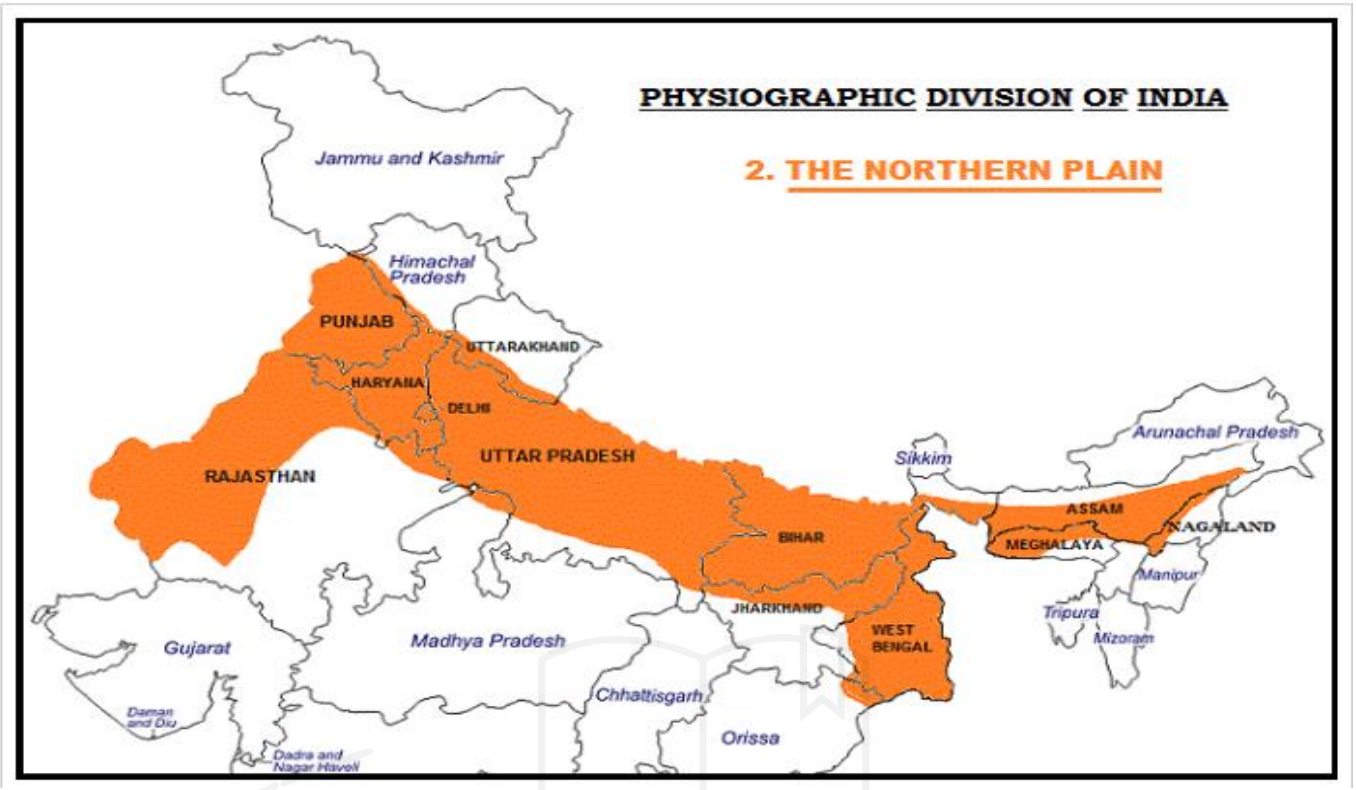

1. राजस्थान के मैदानः-

- राजस्थान में अरावली पर्वतों के पश्चिम में स्थित मैदानी क्षेत्र।
- इस क्षेत्र में शुष्क एवं अर्द्धशुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है ।
- वर्षा के आधार पर इस भाग को दो उपभागों में विभाजित किया जाता है ।
  - **(i).** अरावली पर्वत तथा 25 सेमी. समवर्षा रेखा के मध्य स्थित भाग में अर्द्धशुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है तथा यह भाग 'राजस्थान बागर' कहलाता है । (25 से 50 सेमी. वर्षा)
  - **(ii).** 25 सेमी. समवर्षा रेखा तथा 'रेड क्लिफ रेखा' के मध्य स्थित भाग, जहाँ मरूस्थलीय परिस्थितियाँ पाई जाती है तथा यह क्षेत्र 'मरूस्थलीय' कहलाता है । (25 सेमी. से कम वर्षा)
- 'लूनी' इस मैदानी क्षेत्र की सबसे प्रमुख नदी है, जो कि उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर बहती है ।
- इस क्षेत्र में बहुत सी लवणीय झीलें पाई जाती है । जैसेः- सांभर, लूणकरणसर, डीडवाना,पचपदरा

2. सतलज के मैदानः-

- इस मैदानी क्षेत्र का निर्माण सतलज, रावी तथा व्यास नदियों द्वारा किया गया है तथा यह मुख्य रूप से पंजाब व हरियाणा राज्यों में स्थित है ।
- इस मैदानी क्षेत्र में नदियाँ 'दोआब' का निर्माण करती है ।
- व्यास व रावी के मध्य क्षेत्र - बारी दोआब
- व्यास व सतलज के मध्य - बिस्त दोआब
- इस मैदानी क्षेत्र में नदियाँ उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती है ।
- सतलज तथा घग्घर नदी के मध्य स्थित मैदानी क्षेत्र 'मालवा के मैदान' कहलाता है । जबकि घग्घर तथा यमुना नदी के मध्य स्थित मैदानी भाग 'हरियाणा-भिवानी बागर' कहलाता है ।
- यह भारत का सर्वाधिक कृषि उत्पादकता **(Productivity-** कृषि क्षमता अधिक**)** वाला क्षेत्र है । (सतलज क्षेत्र)

3.गंगा का मैदानः–

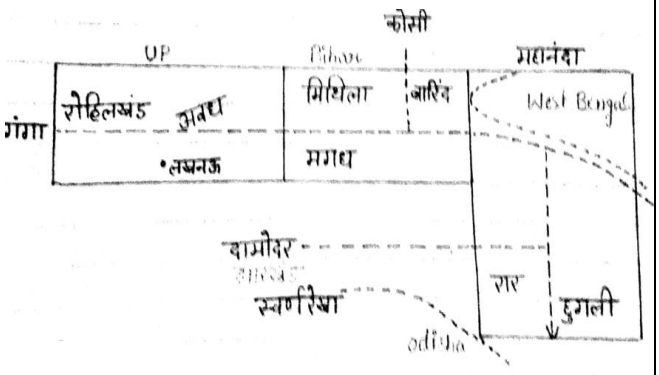

- इस मैदान का निर्माण गंगा तथा इसकी सहायक नदियों द्वारा होता है ।
- इस मैदान का ढाल **NW** से **SE** की ओर है ।
- यह मैदान मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, बिहार तथा पश्चिम बंगाल में स्थित है ।
- इस मैदान के विभिन्न प्रादेशिक नाम हैः–
  1. उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में – रोहिलखण्ड
  2. लखनऊ के पास – अवध के मैदान
  3. बिहार में गंगा के उत्तर में – मिथिला
  4. बिहार में गंगा के दक्षिण में – मगध
  5. कोसी तथा महानंदा नदी के बीच – बारिंद
  6. दामोदर तथा स्वर्णरेखा नदी के बीच – रार
- यह भारत के सबसे विस्तृत मैदान है तथा यहाँ सर्वाधिक उत्पादन पाया जाता है ।

4. ब्रह्मपुत्र के मैदानः–

- इस मैदान का निर्माण ब्रह्मपुत्र तथा उसकी सहायक नदियों के द्वारा होता है ।
- इस मैदान का ढाल उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम की ओर है ।
- यह मैदान मुख्य रूप से असम में स्थित है ।
- यह संकरे मैदान है ।
- इन मैदानों का उपयोग चावल तथा पटसन (जूट) की खेती के लिए किया जाता है ।

अन्य दोआबः–

- सिन्धु सागर दोआब – सिन्धु
- छाज –झेलम
- रेचना – चिनाब
- बारी – रावी
- बिस्त – व्यास सतलज

संरचना के आधार पर मैदानों का विभाजनः–

संरचना के आधार पर उत्तरी मैदानी प्रदेश को निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है । :–

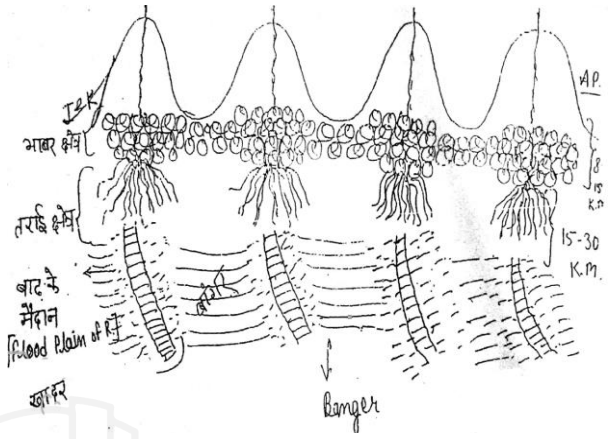

1. भाबर के मैदानः–

- हिमालय पर्वतों के पदेन क्षेत्रों में नदियों द्वारा जमा किये गये बडे अवसादों से 8 से 15 किमी. की चौडाई वाला पट्टीनुमा मैदानी क्षेत्र 'भाबर' कहलाता है ।
- यह क्षेत्र जम्मू–कश्मीर से लेकर अरूणाचल तक विस्तृत है ।
- इन क्षेत्रों में नदियाँ बडे अवसादों के नीचे से होते हुए आगे की ओर बढती हैं, तथा सतह पर अदृश्य हो जाती है ।

(a). तराई क्षेत्रः–

- भाबर क्षेत्र के दक्षिण में 15–30 किमी. की चौडाई में विस्तृत क्षेत्र जहाँ गहन वनस्पति तथा विविध वन्य जीव पाये जाते है, वह 'तराई क्षेत्र' कहलाता है ।
- पंजाब तथा उत्तर प्रदेश में इस क्षेत्र का उपयोग वर्तमान में गेहूँ तथा गन्ना की खेती के लिए किया जा रहा है तथा तराई क्षेत्र देश के पूर्वी भागों तक ही सीमित रह गया है ।

(b). खादर के मैदानः–

- नदियों के बाढ के मैदानों में हर वर्ष मानसून के दौरान नदियाँ बाढ लेकर आती है तथा इन क्षेत्रों में नये जलोढ अवसाद जमा करती है ।